23.2.92 की स्थिति के अनुसार चालू वर्ष में 13,477 पंचायत-ग्रामों को टेलीफोन सुविधा प्रदान कर दी गई है।

Payment of DA to Central Government Employees

*14. SHRI SANTOSH KUMAR SAHU:
SHRI RAJUBHAI A. PARMAR:

Will the Minister of FINANCE be pleased to State;

(a) what is the precentage of Deamess Allowance that has become due to the Central Government employees with effect from the 1st January, 1992;

(b) whether Government propose to issue necessary instructions for payment of next instalment of Dearness Allowance;

(c) if so, by when and if not, the reasons therefor;

(d) whether the Dearness Allowance would be paid in cash: and

(e) if no, what are the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI SHANTARAM POTDUKHE): (a): The percentage of additional instalment of Dearness Allowance due to the Central Govt, employees from 1.1.92 is as follows :-

Pay Range		Percentage
Basi pay upto p.m.	Rs. 3500/-	11%
Basi pay above and upto Rs. 6000/-	Rs 3500/- p.m	8%
Basi Pay above p.m.	Rs 6000/-	7%

(b) and (c) As per existing instructions, the instalment of Dearness Allowance due from 1st January becomes paybale with the salary of March.

(d) and (e) The mode of payment will be decided when the instalment becomes payable.

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर रुपये के अवमूल्यन का प्रभाव

*15. **श्री अजीत जोगी:**
कुमारी सुशीला तिरिया:

क्या **वाणिज्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने देश के निर्यात और आयात पर रुपये के अवमूल्यन के प्रभाव का कोई मूल्यांकन किया है;

(ख) यदि हां, तो रुपये के अवमूल्यन के पश्चात 15 फरवरी, 1992 तक डॉलर के रूप में आयात और निर्यात में कितने प्रतिशत की वृद्धि अथवा कमी हुई है;

(ग) क्या रुपये के अवमूल्यन का उन देशों के साथ हमारे व्यापार पर प्रतिकूल असर पड़ा है, जोकि रुपये में भुगतान स्वीकार करते हैं; और

(घ) यदि हां, तो सरकार ऐसे देशों के साथ व्यापार-संबंधों को बढ़ाने के लिए क्या कदम उठाने का विचार रखती है?

वाणिज्य मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री पी० चिदम्बरम): (क) जी, हां। तथापि, यह बताने की आवश्यकता है कि निर्यात केवल अवमूल्यन पर ही आधारित नहीं होते हैं बल्कि विश्व के व्यापार का वातावरण, घरेलू उत्पादन, निर्यातों के लिए बेशी की उपलब्धता, निर्यात उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण आयातित कच्चे माल तथा पूंजीगत वस्तुओं की उपलब्धता, ऋण की उपलब्धता तथा निर्यातकों को अधोमान्य ब्याज की दरें आदि जैसे अन्य कई कारकों पर भी निर्भर करते हैं। इसी प्रकार आयात, आयात करने के लिए विदेशी मुद्रा की उपलब्धता, आवश्यक वस्तुओं के घरेलू उत्पादन में कमी, औद्योगिक क्रियाकलाप, आदि से भी संबंधित हैं। यह उल्लेख करने की भी आवश्यकता है कि अवमूल्यन के प्रभाव को तत्काल ही महसूस नहीं किया जाता, अपितु, ऐसे प्रभाव के लिए समय अंतराल होता है।

(ख) भारत के विदेश व्यापार से संबंधित आंकड़े अप्रैल-दिसंबर, 1991 तक उपलब्ध हैं। एक विवरण-पत्र, अनुपत्र में दिया गया है। [देखिए परिशिष्ट CLXII , अनुपत्र संख्या 1]

(ग) वर्ष 1991 में रुपया भुगतान देशों को भारतीय निर्यातों में समस्त रूप में कमी मुख्य रूप से भूतपूर्व यू०एस०एस०आर० में बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिति के कारण थी न कि रुपए के अवमूल्यन के कारण।

(घ) हमारी कार्यनीति स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रमण्डल (सी०आई०एस०) के अलग-अलग गणराज्यों तथा रुपया भुगतान क्षेत्र के अन्य देशों जैसे चैकोस्लोवाकिया तथा रोमानियां से निपटने का है। हमारी भावी निर्यात कार्यनीति में ये तत्व शामिल होंगे: परिवर्तित आर्थिक वातावरण में अत्यधिक विपणन बल, नई संभावनाओं का उपयोग